॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(द्वितीय खण्ड)

[वनपर्व और विराटपर्व]

[सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अनुवादक—

साहित्याचार्य पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

वनपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(अरण्यपर्व)	
१-	पाण्डवोंका वनगमन, पुरवासियोंद्वारा उनका अनुगमन और युधिष्ठिरके अनुरोध करनेपर उनमेंसे बहुतोंका लौटना तथा पाण्डवोंका प्रमाणकोटितीर्थमें रात्रिवास	१७
२-	धनके दोष, अतिथि-सत्कारकी महत्ता तथा कल्याणके उपायोंके विषयमें धर्मराज युधिष्ठिरसे ब्राह्मणों तथा शौनकजीकी बातचीत	२१
३-	युधिष्ठिरके द्वारा अन्नके लिये भगवान् सूर्यकी उपासना और उनसे अक्षयपात्रकी प्राप्ति ...	२७
४-	विदुरजीका धृतराष्ट्रको हितकी सलाह देना और धृतराष्ट्रका रुष्ट होकर महलमें चला जाना.	३४
५-	पाण्डवोंका काम्यकवनमें प्रवेश और विदुरजीका वहाँ जाकर उनसे मिलना और बातचीत करना	३७
६-	धृतराष्ट्रका संजयको भेजकर विदुरको वनसे बुलवाना और उनसे क्षमा-प्रार्थना	३९
७-	दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि और कर्णकी सलाह, पाण्डवोंका वध करनेके लिये उनका वनमें जानेकी तैयारी तथा व्यासजीका आकर उनको रोकना	४१
८-	व्यासजीका धृतराष्ट्रसे दुर्योधनके अन्यायको रोकनेके लिये अनुरोध	४३
९-	व्यासजीके द्वारा सुरभि और इन्द्रके उपाख्यानका वर्णन तथा उनका पाण्डवोंके प्रति दया दिखलाना	४४
१०-	व्यासजीका जाना, मैत्रेयजीका धृतराष्ट्र और दुर्योधनसे पाण्डवोंके प्रति सद्भावका अनुरोध तथा दुर्योधनके अशिष्ट व्यवहारसे रुष्ट होकर उसे शाप देना	४६
	(किर्मीरवधपर्व)	
११-	भीमसेनके द्वारा किर्मीरके वधकी कथा	४९
	(अर्जुनाभिगमनपर्व)	
१२-	अर्जुन और द्रौपदीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति, द्रौपदीका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने प्रति किये गये अपमान और दुःखका वर्णन और भगवान् श्रीकृष्ण, अर्जुन एवं धृष्टद्युम्नका उसे आश्वासन देना	५५
१३-	श्रीकृष्णका जूएके दोष बताते हुए पाण्डवोंपर आयी हुई विपत्तिमें अपनी अनुपस्थितिको कारण मानना	६४
१४-	द्यूतके समय न पहुँचनेमें श्रीकृष्णके द्वारा शाल्वके साथ युद्ध करने और सौभविमानसहित उसे नष्ट करनेका संक्षिप्त वर्णन	६६
१५-	सौभनाशकी विस्तृत कथाके प्रसंगमें द्वारकामें युद्धसम्बन्धी रक्षात्मक तैयारियोंका वर्णन ...	६८
१६-	शाल्वकी विशाल सेनाके आक्रमणका यादव-सेनाद्वारा प्रतिरोध, साम्बद्वारा क्षेमवृद्धिकी पराजय, वेगवान्‌का वध तथा चारुदेष्णद्वारा विविन्ध्यदैत्यका वध एवं प्रद्युम्नद्वारा सेनाको आश्वासन	७०
१७-	प्रद्युम्न और शाल्वका घोर युद्ध	७४
१८-	मूर्च्छावस्थामें सारथिके द्वारा रणभूमिसे बाहर लाये जानेपर प्रद्युम्नका अनुताप और इसके लिये सारथिको उपालम्भ देना	७६
१९-	प्रद्युम्नके द्वारा शाल्वकी पराजय	७८
२०-	श्रीकृष्ण और शाल्वका भीषण युद्ध	८०
२१-	श्रीकृष्णका शाल्वकी मायासे मोहित होकर पुनः सजग होना	८३
२२-	शाल्ववधोपाख्यानकी समाप्ति और युधिष्ठिरकी आज्ञा लेकर श्रीकृष्ण, धृष्टद्युम्न तथा अन्य सब राजाओंका अपने-अपने नगरको प्रस्थान ...	८५
२३-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जानेके लिये उद्यत होना और प्रजावर्गकी व्याकुलता	८९
२४-	पाण्डवोंका द्वैतवनमें जाना	९१
२५-	महर्षि मार्कण्डेयका पाण्डवोंको धर्मका आदेश देकर उत्तर दिशाकी ओर प्रस्थान	९४
२६-	दल्भपुत्र बकका युधिष्ठिरको ब्राह्मणोंका महत्त्व बतलाना	९६
२७-	द्रौपदीका युधिष्ठिरसे उनके शत्रुविषयक क्रोधको उभाड़नेके लिये संतापपूर्ण वचन	९८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२८-	द्रौपदीद्वारा प्रह्लाद-बलि-संवादका वर्णन—तेज और क्षमाके अवसर	१०१
२९-	युधिष्ठिरके द्वारा क्रोधकी निन्दा और क्षमा-भावकी विशेष प्रशंसा	१०४
३०-	दुःखसे मोहित द्रौपदीका युधिष्ठिरकी बुद्धि, धर्म एवं ईश्वरके न्यायपर आक्षेप	१०७
३१-	युधिष्ठिरद्वारा द्रौपदीके आक्षेपका समाधान तथा ईश्वर, धर्म और महापुरुषोंके आदरसे लाभ और अनादरसे हानि	११२
३२-	द्रौपदीका पुरुषार्थको प्रधान मानकर पुरुषार्थ करनेके लिये जोर देना	११५
३३-	भीमसेनका पुरुषार्थकी प्रशंसा करना और युधिष्ठिरको उत्तेजित करते हुए क्षत्रिय-धर्मके अनुसार युद्ध छेड़नेका अनुरोध	१२०
३४-	धर्म और नीतिकी बात कहते हुए युधिष्ठिरकी अपनी प्रतिज्ञाके पालनरूप धर्मपर ही डटे रहनेकी घोषणा	१२६
३५-	दुःखित भीमसेनका युधिष्ठिरको युद्धके लिये उत्साहित करना	१२९
३६-	युधिष्ठिरका भीमसेनको समझाना, व्यासजीका आगमन और युधिष्ठिरको प्रतिस्मृतिविद्याप्रदान तथा पाण्डवोंका पुनः काम्यकवनगमन	१३२
३७-	अर्जुनका सब भाई आदिसे मिलकर इन्द्रकील पर्वतपर जाना एवं इन्द्रका दर्शन करना	१३५
	(कैरातपर्व)	
३८-	अर्जुनकी उग्र तपस्या और उसके विषयमें ऋषियोंका भगवान् शंकरके साथ वार्तालाप	१३९
३९-	भगवान् शंकर और अर्जुनका युद्ध, अर्जुनपर उनका प्रसन्न होना एवं अर्जुनके द्वारा भगवान् शंकरकी स्तुति	१४२
४०-	भगवान् शंकरका अर्जुनको वरदान देकर अपने धामको प्रस्थान	१४९
४१-	अर्जुनके पास दिक्पालोंका आगमन एवं उन्हें दिव्यास्त्र-प्रदान तथा इन्द्रका उन्हें स्वर्गमें चलनेका आदेश देना	१५१
	(इन्द्रलोकाभिगमनपर्व)	
४२-	अर्जुनका हिमालयसे विदा होकर मातलिके साथ स्वर्गलोकको प्रस्थान	१५५
४३-	अर्जुनद्वारा देवराज इन्द्रका दर्शन तथा इन्द्रसभामें उनका स्वागत	१५८
४४-	अर्जुनको अस्त्र और संगीतकी शिक्षा	१६०
४५-	चित्रसेन और उर्वशीका वार्तालाप	१६१
४६-	उर्वशीका कामपीड़ित होकर अर्जुनके पास जाना और उनके अस्वीकार करनेपर उन्हें शाप देकर लौट आना	१६३
४७-	लोमश मुनिका स्वर्गमें इन्द्र और अर्जुनसे मिलकर उनका संदेश ले काम्यकवनमें आना	१६७
४८-	दुःखित धृतराष्ट्रका संजयके सम्मुख अपने पुत्रोंके लिये चिन्ता करना	१७०
४९-	संजयके द्वारा धृतराष्ट्रकी बातोंका अनुमोदन और धृतराष्ट्रका संताप	१७२
५०-	वनमें पाण्डवोंका आहार	१७३
५१-	संजयका धृतराष्ट्रके प्रति श्रीकृष्णादिके द्वारा की हुई दुर्योधनादिके वधकी प्रतिज्ञाका वृत्तान्त सुनाना	१७५
	(नलोपाख्यानपर्व)	
५२-	भीमसेन-युधिष्ठिर-संवाद, बृहदश्वका आगमन तथा युधिष्ठिरके पूछनेपर बृहदश्वके द्वारा नलोपाख्यानकी प्रस्तावना	१७८
५३-	नल-दमयन्तीके गुणोंका वर्णन, उनका परस्पर अनुराग और हंसका दमयन्ती और नलको एक-दूसरेके संदेश सुनाना	१८२
५४-	स्वर्गमें नारद और इन्द्रकी बातचीत, दमयन्तीके स्वयंवरके लिये राजाओं तथा लोकपालोंका प्रस्थान	१८५
५५-	नलका दूत बनकर राजमहलमें जाना और दमयन्तीको देवताओंका संदेश सुनाना	१८७
५६-	नलका दमयन्तीसे वार्तालाप करना और लौटकर देवताओंको उसका सन्देश सुनाना	१८९
५७-	स्वयंवरमें दमयन्तीद्वारा नलका वरण, देवताओंका नलको वर देना, देवताओं और राजाओंका प्रस्थान, नल-दमयन्तीका विवाह एवं नलका यज्ञानुष्ठान और संतानोत्पादन	१९१
५८-	देवताओंके द्वारा नलके गुणोंका गान और उनके निषेध करनेपर भी नलके विरुद्ध कलियुगका कोप	१९६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
५९-	नलमें कलियुगका प्रवेश एवं नल और पुष्करकी द्यूतक्रीडा, प्रजा और दमयन्तीके निवारण करनेपर भी राजाका द्यूतसे निवृत्त नहीं होना	१९७
६०-	दुःखित दमयन्तीका वार्ष्णेयके द्वारा कुमार-कुमारीको कुण्डिनपुर भेजना	१९९
६१-	नलका जूएमें हारकर दमयन्तीके साथ वनको जाना और पक्षियोंद्वारा आपद्ग्रस्त नलके वस्त्रका अपहरण	२०१
६२-	राजा नलकी चिन्ता और दमयन्तीको अकेली सोती छोड़कर उनका अन्यत्र प्रस्थान	२०४
६३-	दमयन्तीका विलाप तथा अजगर एवं व्याधसे उसके प्राण एवं सतीत्वकी रक्षा तथा दमयन्तीके पातिव्रत्यधर्मके प्रभावसे व्याधका विनाश	२०६
६४-	दमयन्तीका विलाप और प्रलाप, तपस्वियोंद्वारा दमयन्तीको आश्वासन तथा उसकी व्यापारियों-के दलसे भेंट	२१०
६५-	जंगली हाथियोंद्वारा व्यापारियोंके दलका सर्वनाश तथा दुःखित दमयन्तीका चेदिराजके भवनमें सुखपूर्वक निवास	२१९
६६-	राजा नलके द्वारा दावानलसे कर्कोटक नागकी रक्षा तथा नागद्वारा नलको आश्वासन	२२५
६७-	राजा नलका ऋतुपर्णके यहाँ अश्वाध्यक्षके पदपर नियुक्त होना और वहाँ दमयन्तीके लिये निरन्तर चिन्तित रहना तथा उनकी जीवलसे बातचीत	२२७
६८-	विदर्भराजका नल-दमयन्तीकी खोजके लिये ब्राह्मणोंको भेजना, सुदेव ब्राह्मणका चेदिराजके भवनमें जाकर मन-ही-मन दमयन्तीके गुणोंका चिन्तन और उससे भेंट करना	२२८
६९-	दमयन्तीका अपने पिताके यहाँ जाना और वहाँसे नलको ढूँढ़नेके लिये अपना संदेश देकर ब्राह्मणोंको भेजना	२३२
७०-	पर्णादका दमयन्तीसे बाहुकरूपधारी नलका समाचार बताना और दमयन्तीका ऋतुपर्णके यहाँ सुदेव नामक ब्राह्मणको स्वयंवरका संदेश देकर भेजना	२३६
७१-	राजा ऋतुपर्णका विदर्भदेशको प्रस्थान, राजा नलके विषयमें वार्ष्णेयका विचार और बाहुककी अद्भुत अश्वसंचालन-कलासे वार्ष्णेय और ऋतुपर्णका प्रभावित होना	२३८
७२-	ऋतुपर्णके उत्तरीय वस्त्र गिरने और बहेड़ेके वृक्षके फलोंको गिननेके विषयमें नलके साथ ऋतुपर्णकी बातचीत, ऋतुपर्णसे नलको द्यूत-विद्याके रहस्यकी प्राप्ति और उनके शरीरसे कलियुगका निकलना	२४१
७३-	ऋतुपर्णका कुण्डिनपुरमें प्रवेश, दमयन्तीका विचार तथा भीमके द्वारा ऋतुपर्णका स्वागत	२४४
७४-	बाहुक-केशिनी-संवाद	२४७
७५-	दमयन्तीके आदेशसे केशिनीद्वारा बाहुककी परीक्षा तथा बाहुकका अपने लड़के-लड़कियोंको देखकर उनसे प्रेम करना	२४९
७६-	दमयन्ती और बाहुककी बातचीत, नलका प्राकट्य और नल-दमयन्ती-मिलन	२५२
७७-	नलके प्रकट होनेपर विदर्भनगरमें महान् उत्सवका आयोजन, ऋतुपर्णके साथ नलका वार्तालाप और ऋतुपर्णका नलसे अश्वविद्या सीखकर अयोध्या जाना	२५६
७८-	राजा नलका पुष्करको जूएमें हराना और उसको राजधानीमें भेजकर अपने नगरमें प्रवेश करना	२५७
७९-	राजा नलके आख्यानके कीर्तनका महत्त्व, बृहदश्व मुनिका युधिष्ठिरको आश्वासन देना तथा द्यूतविद्या और अश्वविद्याका रहस्य बताकर जाना	२६०
	(तीर्थयात्रापर्व)	
८०-	अर्जुनके लिये द्रौपदीसहित पाण्डवोंकी चिन्ता	२६२
८१-	युधिष्ठिरके पास देवर्षि नारदका आगमन और तीर्थयात्राके फलके सम्बन्धमें पूछनेपर नारदजी-द्वारा भीष्म-पुलस्त्य-संवादकी प्रस्तावना	२६५
८२-	भीष्मजीके पूछनेपर पुलस्त्यजीका उन्हें विभिन्न तीर्थोंकी यात्राका माहात्म्य बताना	२६६
८३-	कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित अनेक तीर्थोंकी महत्ताका वर्णन	२७५
८४-	नाना प्रकारके तीर्थोंकी महिमा	२८९
८५-	गंगासागर, अयोध्या, चित्रकूट, प्रयाग आदि विभिन्न तीर्थोंकी महिमाका वर्णन और गंगाका माहात्म्य	२९९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
८६-	युधिष्ठिरका धौम्य मुनिसे पुण्य तपोवन, आश्रम एवं नदी आदिके विषयमें पूछना	३०७
८७-	धौम्यद्वारा पूर्वदिशाके तीर्थोंका वर्णन	३०९
८८-	धौम्यमुनिके द्वारा दक्षिणदिशावर्ती तीर्थोंका वर्णन	३११
८९-	धौम्यद्वारा पश्चिम दिशाके तीर्थोंका वर्णन	३१३
९०-	धौम्यद्वारा उत्तर दिशाके तीर्थोंका वर्णन	३१४
९१-	महर्षि लोमशका आगमन और युधिष्ठिरसे अर्जुनके पाशुपत आदि दिव्यास्त्रोंकी प्राप्तिका वर्णन तथा इन्द्रका संदेश सुनाना	३१६
९२-	महर्षि लोमशके मुखसे इन्द्र और अर्जुनका संदेश सुनकर युधिष्ठिरका प्रसन्न होना और तीर्थयात्राके लिये उद्यत हो अपने अधिक साथियोंको विदा करना	३१९
९३-	ऋषियोंको नमस्कार करके पाण्डवोंका तीर्थ-यात्राके लिये विदा होना	३२१
९४-	देवताओं और धर्मात्मा राजाओंका उदाहरण देकर महर्षि लोमशका युधिष्ठिरको अधर्मसे हानि बताना और तीर्थयात्राजनित पुण्यकी महिमा-का वर्णन करते हुए आश्वासन देना	३२३
९५-	पाण्डवोंका नैमिषारण्य आदि तीर्थोंमें जाकर प्रयाग तथा गयातीर्थमें जाना और गय राजाके महान् यज्ञोंकी महिमा सुनना	३२५
९६-	इल्वल और वातापिका वर्णन, महर्षि अगस्त्यका पितरोंके उद्धारके लिये विवाह करनेका विचार तथा विदर्भराजका महर्षि अगस्त्यसे एक कन्या पाना	३२७
९७-	महर्षि अगस्त्यका लोपामुद्रासे विवाह, गंगा-द्वारमें तपस्या एवं पत्नीकी इच्छासे धनसंग्रहके लिये प्रस्थान	३२९
९८-	धन प्राप्त करनेके लिये अगस्त्यका श्रुतर्वा, ब्रध्नश्व और त्रसदस्यु आदिके पास जाना	३३२
९९-	अगस्त्यजीका इल्वलके यहाँ धनके लिये जाना, वातापि तथा इल्वलका वध, लोपामुद्राको पुत्रकी प्राप्ति तथा श्रीरामके द्वारा हरे हुए तेजकी परशुरामजीको तीर्थस्नानद्वारा पुनः प्राप्ति	३३३
१००-	वृत्रासुरसे त्रस्त देवताओंको महर्षि दधीचका अस्थिदान एवं वज्रका निर्माण	३३९
१०१-	वृत्रासुरका वध और असुरोंकी धर्यकर मन्त्रणा	३४२
१०२-	कालेयोंद्वारा तपस्वियों, मुनियों और ब्रह्मचारियों आदिका संहार तथा देवताओंद्वारा भगवान् विष्णुकी स्तुति	३४४
१०३-	भगवान् विष्णुके आदेशसे देवताओंका महर्षि अगस्त्यके आश्रमपर जाकर उनकी स्तुति करना	३४६
१०४-	अगस्त्यजीका विन्ध्यपर्वतको बढ़नेसे रोकना और देवताओंके साथ सागर-तटपर जाना	३४८
१०५-	अगस्त्यजीके द्वारा समुद्रपान और देवताओंका कालेय दैत्योंका वध करके ब्रह्माजीसे समुद्रको पुनः भरनेका उपाय पूछना	३५०
१०६-	राजा सगरका सन्तानके लिये तपस्या करना और शिवजीके द्वारा वरदान पाना	३५२
१०७-	सगरके पुत्रोंकी उत्पत्ति, साठ हजार सगरपुत्रोंका कपिलकी क्रोधाग्निसे भस्म होना, असमंजसका परित्याग, अंशुमान्‌के प्रयत्नसे सगरके यज्ञकी पूर्ति, अंशुमान्‌से दिलीपको और दिलीपसे भगीरथको राज्यकी प्राप्ति	३५४
१०८-	भगीरथका हिमालयपर तपस्याद्वारा गंगा और महादेवजीको प्रसन्न करके उनसे वर प्राप्त करना	३६०
१०९-	पृथ्वीपर गंगाजीके उतरने और समुद्रको जलसे भरनेका विवरण तथा सगरपुत्रोंका उद्धार	३६२
११०-	नन्दा तथा कौशिकीका माहात्म्य, ऋष्यशृंग मुनिका उपाख्यान और उनको अपने राज्यमें लानेके लिये राजा लोमपादका प्रयत्न	३६३
१११-	वेश्याका ऋष्यशृंगको लुभाना और विभाण्डक मुनिका आश्रमपर आकर अपने पुत्रकी चिन्ताका कारण पूछना	३६८
११२-	ऋष्यशृंगका पिताको अपनी चिन्ताका कारण बताते हुए ब्रह्मचारीरूपधारी वेश्याके स्वरूप और आचरणका वर्णन	३७१
११३-	ऋष्यशृंगका अंगराज लोमपादके यहाँ जाना, राजाका उन्हें अपनी कन्या देना, राजाद्वारा विभाण्डक मुनिका सत्कार तथा उनपर मुनिका प्रसन्न होना	३७३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
११४-	युधिष्ठिरका कौशिकी, गंगासागर एवं वैतरणी नदी होते हुए महेन्द्रपर्वतपर गमन	३७६
११५-	अकृतव्रणके द्वारा युधिष्ठिरसे परशुरामजीके उपाख्यानके प्रसंगमें ऋचीक मुनिका गाधि-कन्याके साथ विवाह और भृगुऋषिकी कृपासे जमदग्निकी उत्पत्तिका वर्णन	३७९
११६-	पिताकी आज्ञासे परशुरामजीका अपनी माताका मस्तक काटना और उन्हींके वरदानसे पुनः जिलाना, परशुरामजीद्वारा कार्तवीर्य-अर्जुनका वध और उसके पुत्रोंद्वारा जमदग्नि मुनिकी हत्या	३८२
११७-	परशुरामजीका पिताके लिये विलाप और पृथ्वीको इक्कीस बार निःक्षत्रिय करना एवं महाराज युधिष्ठिरके द्वारा परशुरामजीका पूजन	३८५
११८-	युधिष्ठिरका विभिन्न तीर्थोंमें होते हुए प्रभासक्षेत्रमें पहुँचकर तपस्यामें प्रवृत्त होना और यादवोंका पाण्डवोंसे मिलना	३८७
११९-	प्रभासतीर्थमें बलरामजीके पाण्डवोंके प्रति सहानुभूतिसूचक दुःखपूर्ण उद्‌गार	३९१
१२०-	सात्यकिके शौर्यपूर्ण उद्‌गार तथा युधिष्ठिरद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका अनुमोदन एवं पाण्डवोंका पयोष्णी नदीके तटपर निवास	३९३
१२१-	राजा गयके यज्ञकी प्रशंसा, पयोष्णी, वैदूर्य पर्वत और नर्मदाके माहात्म्य तथा च्यवन-सुकन्याके चरित्रका आरम्भ	३९७
१२२-	महर्षि च्यवनको सुकन्याकी प्राप्ति	३९९
१२३-	अश्विनीकुमारोंकी कृपासे महर्षि च्यवनको सुन्दर रूप और युवावस्थाकी प्राप्ति	४०१
१२४-	शर्यातिके यज्ञमें च्यवनका इन्द्रपर कोप करके वज्रको स्तम्भित करना और उसे मारनेके लिये मदासुरको उत्पन्न करना	४०४
१२५-	अश्विनीकुमारोंका यज्ञमें भाग स्वीकार कर लेनेपर इन्द्रका संकटमुक्त होना तथा लोमशजीके द्वारा अन्यान्य तीर्थोंके महत्त्वका वर्णन	४०६
१२६-	राजा मान्धाताकी उत्पत्ति और संक्षिप्त चरित्र	४०८
१२७-	सोमक और जन्तुका उपाख्यान	४११
१२८-	सोमकको सौ पुत्रोंकी प्राप्ति तथा सोमक और पुरोहितका समानरूपसे नरक और पुण्यलोकोंका उपभोग करना	४१३
१२९-	कुरुक्षेत्रके द्वारभूत प्लक्षप्रस्रवण नामक यमुना-तीर्थ एवं सरस्वतीतीर्थकी महिमा	४१५
१३०-	विभिन्न तीर्थोंकी महिमा और राजा उशीनरकी कथाका आरम्भ	४१७
१३१-	राजा उशीनरद्वारा बाजको अपने शरीरका मांस देकर शरणमें आये हुए कबूतरके प्राणोंकी रक्षा करना	४१९
१३२-	अष्टावक्रके जन्मका वृत्तान्त और उनका राजा जनकके दरबारमें जाना	४२३
१३३-	अष्टावक्रका द्वारपाल तथा राजा जनकसे वार्तालाप	४२५
१३४-	बन्दी और अष्टावक्रका शास्त्रार्थ, बन्दीकी पराजय तथा समुद्रमें स्नानसे अष्टावक्रके अंगोंका सीधा होना	४२९
१३५-	कर्दमिलक्षेत्र आदि तीर्थोंकी महिमा, रैभ्य एवं भरद्वाजपुत्र यवक्रीत मुनिकी कथा तथा ऋषियोंका अनिष्ट करनेके कारण मेधावीकी मृत्यु	४३६
१३६-	यवक्रीतका रैभ्यमुनिकी पुत्रवधूके साथ व्यभिचार और रैभ्यमुनिके क्रोधसे उत्पन्न राक्षसके द्वारा उसकी मृत्यु	४४१
१३७-	भरद्वाजका पुत्रशोकसे विलाप करना, रैभ्यमुनिको शाप देना एवं स्वयं अग्निमें प्रवेश करना	४४२
१३८-	अर्वावसुकी तपस्याके प्रभावसे परावसुका ब्रह्महत्यासे मुक्त होना और रैभ्य, भरद्वाज तथा यवक्रीत आदिका पुनर्जीवित होना	४४४
१३९-	पाण्डवोंकी उत्तरखण्ड-यात्रा और लोमशजी-द्वारा उसकी दुर्गमताका कथन	४४६
१४०-	भीमसेनका उत्साह तथा पाण्डवोंका कुलिन्दराज सुबाहुके राज्यमें होते हुए गन्धमादन और हिमालय पर्वतको प्रस्थान	४४८
१४१-	युधिष्ठिरका भीमसेनसे अर्जुनको न देखनेके कारण मानसिक चिन्ता प्रकट करना एवं उनके गुणोंका स्मरण करते हुए गन्धमादन पर्वतपर जानेका दृढ़ निश्चय करना	४५०
१४२-	पाण्डवोंद्वारा गंगाजीकी वन्दना, लोमशजीका नरकासुरके वध और भगवान् वाराहद्वारा वसुधाके उद्धारकी कथा कहना	४५२

अध्याय — विषय — पृष्ठ-संख्या

१४३- गन्धमादनकी यात्राके समय पाण्डवोंका आँधी-पानीसे सामना ४५७
१४४- द्रौपदीकी मूर्छा, पाण्डवोंके उपचारसे उसका सचेत होना तथा भीमसेनके स्मरण करनेपर घटोत्कचका आगमन ४५९
१४५- घटोत्कच और उसके साथियोंकी सहायतासे पाण्डवोंका गन्धमादन पर्वत एवं बदरिकाश्रममें प्रवेश तथा बदरीवृक्ष, नर-नारायणाश्रम और गंगाका वर्णन ४६१
१४६- भीमसेनका सौगन्धिक कमल लानेके लिये जाना और कदलीवनमें उनकी हनुमान्‌जीसे भेंट ४६५
१४७- श्रीहनुमान् और भीमसेनका संवाद ४७४
१४८- हनुमान्‌जीका भीमसेनको संक्षेपसे श्रीरामका चरित्र सुनाना ४७६
१४९- हनुमान्‌जीके द्वारा चारों युगोंके धर्मोंका वर्णन ४७८
१५०- श्रीहनुमान्‌जीके द्वारा भीमसेनको अपने विशाल रूपका प्रदर्शन और चारों वर्णोंके धर्मोंका प्रतिपादन ४८१
१५१- श्रीहनुमान्‌जीका भीमसेनको आश्वासन और विदा देकर अन्तर्धान होना ४८५
१५२- भीमसेनका सौगन्धिक वनमें पहुँचना ४८७
१५३- क्रोधवश नामक राक्षसोंका भीमसेनसे सरोवरके निकट आनेका कारण पूछना ४८८
१५४- भीमसेनके द्वारा क्रोधवश नामक राक्षसोंकी पराजय और द्रौपदीके लिये सौगन्धिक कमलोंका संग्रह करना ४८९
१५५- भयंकर उत्पात देखकर युधिष्ठिर आदिकी चिन्ता और सबका गन्धमादनपर्वतपर सौगन्धिकवनमें भीमसेनके पास पहुँचना.... ४९२
१५६- पाण्डवोंका आकाशवाणीके आदेशसे पुनः नर-नारायणाश्रममें लौटना ४९५

(जटासुरवधपर्व)

१५७- जटासुरके द्वारा द्रौपदीसहित युधिष्ठिर, नकुल, सहदेवका हरण तथा भीमसेनद्वारा जटासुर-का वध ४९६

(यक्षयुद्धपर्व)

१५८- नर-नारायण-आश्रमसे वृषपर्वाके यहाँ होते हुए राजर्षि आर्ष्टिषेणके आश्रमपर जाना .. ५०२
१५९- प्रश्नके रूपमें आर्ष्टिषेणका युधिष्ठिरके प्रति उपदेश ५०९
१६०- पाण्डवोंका आर्ष्टिषेणके आश्रमपर निवास, द्रौपदीके अनुरोधसे भीमसेनका पर्वतके शिखरपर जाना और यक्षों तथा राक्षसोंसे युद्ध करके मणिमान्‌का वध करना ५११
१६१- कुबेरका गन्धमादन पर्वतपर आगमन और युधिष्ठिरसे उनकी भेंट ५१६
१६२- कुबेरका युधिष्ठिर आदिको उपदेश और सान्त्वना देकर अपने भवनको प्रस्थान..... ५२१
१६३- धौम्यका युधिष्ठिरको मेरु पर्वत तथा उसके शिखरोंपर स्थित ब्रह्मा, विष्णु आदिके स्थानोंका लक्ष्य कराना और सूर्य-चन्द्रमाकी गति एवं प्रभावका वर्णन ५२४
१६४- पाण्डवोंकी अर्जुनके लिये उत्कण्ठा और अर्जुनका आगमन..... ५२७

(निवातकवचयुद्धपर्व)

१६५- अर्जुनका गन्धमादन पर्वतपर आकर अपने भाइयोंसे मिलना ५२९
१६६- इन्द्रका पाण्डवोंके पास आना और युधिष्ठिरको सान्त्वना देकर स्वर्गको लौटना ५३२
१६७- अर्जुनके द्वारा अपनी तपस्या-यात्राके वृत्तान्तका वर्णन, भगवान् शिवके साथ संग्राम और पाशुपतास्त्र-प्राप्तिकी कथा ५३३
१६८- अर्जुनद्वारा स्वर्गलोकमें अपनी अस्त्रशिक्षा और निवातकवच दानवोंके साथ युद्धकी तैयारीका कथन ५३७
१६९- अर्जुनका पातालमें प्रवेश और निवातकवचोंके साथ युद्धारम्भ ५४४
१७०- अर्जुन और निवातकवचोंका युद्ध ५४५
१७१- दानवोंके मायामय युद्धका वर्णन ५४८
१७२- निवातकवचोंका संहार ५५०
१७३- अर्जुनद्वारा हिरण्यपुरवासी पौलोम तथा कालकेयोंका वध और इन्द्रद्वारा अर्जुनका अभिनन्दन ५५२
१७४- अर्जुनके मुखसे यात्राका वृत्तान्त सुनकर युधिष्ठिरद्वारा उनका अभिनन्दन और दिव्यास्त्र-दर्शनकी इच्छा प्रकट करना ५५८

अध्याय — विषय — पृष्ठ-संख्या

१७५- नारद आदिका अर्जुनको दिव्यास्त्रोंके प्रदर्शनसे रोकना ५५९

(आजगरपर्व)

१७६- भीमसेनकी युधिष्ठिरसे बातचीत और पाण्डवोंका गन्धमादनसे प्रस्थान ५६१
१७७- पाण्डवोंका गन्धमादनसे बदरिकाश्रम, सुबाहुनगर और विशाखयूप वनमें होते हुए सरस्वती-तटवर्ती द्वैतवनमें प्रवेश..... ५६४
१७८- महाबली भीमसेनका हिंसक पशुओंको मारना और अजगरद्वारा पकड़ा जाना ५६६
१७९- भीमसेन और सर्परूपधारी नहुषकी बातचीत, भीमसेनकी चिन्ता तथा युधिष्ठिरद्वारा भीमकी खोज ५६९
१८०- युधिष्ठिरका भीमसेनके पास पहुँचना और सर्परूपधारी नहुषके प्रश्नोंका उत्तर देना... ५७३
१८१- युधिष्ठिरद्वारा अपने प्रश्नोंका उचित उत्तर पाकर संतुष्ट हुए सर्परूपधारी नहुषका भीमसेनको छोड़ देना तथा युधिष्ठिरके साथ वार्तालाप करनेके प्रभावसे सर्पयोनिसे मुक्त होकर स्वर्ग जाना .. ५७६

(मार्कण्डेयसमास्यापर्व)

१८२- वर्षा और शरद्-ऋतुका वर्णन एवं युधिष्ठिर आदिका पुनः द्वैतवनसे काम्यकवनमें प्रवेश.. ५८०
१८३- काम्यकवनमें पाण्डवोंके पास भगवान् श्रीकृष्ण, मुनिवर मार्कण्डेय तथा नारदजीका आगमन एवं युधिष्ठिरके पूछनेपर मार्कण्डेयजीके द्वारा कर्मफल-भोगका विवेचन..... ५८२
१८४- तपस्वी तथा स्वधर्मपरायण ब्राह्मणोंका माहात्म्य..... ५९२
१८५- ब्राह्मणकी महिमाके विषयमें अत्रिमुनि तथा राजा पृथुकी प्रशंसा..... ५९४
१८६- तार्क्ष्यमुनि और सरस्वतीका संवाद ५९७
१८७- वैवस्वत मनुका चरित्र तथा मत्स्यावतारकी कथा..... ६०१
१८८- चारों युगोंकी वर्ष-संख्या एवं कलियुगके प्रभावका वर्णन, प्रलयकालका दृश्य और मार्कण्डेयजीको बालमुकुन्दजीके दर्शन, मार्कण्डेयजीका भगवान्‌के उदरमें प्रवेश कर ब्रह्माण्डदर्शन करना और फिर बाहर निकलकर उनसे वार्तालाप करना ६०५
१८९- भगवान् बालमुकुन्दका मार्कण्डेयको अपने स्वरूपका परिचय देना तथा मार्कण्डेयद्वारा श्रीकृष्णकी महिमाका प्रतिपादन और पाण्डवोंका श्रीकृष्णकी शरणमें जाना..... ६१५
१९०- युगान्तकालिक कलियुगके समयके वर्तावका तथा कल्कि-अवतारका वर्णन ६१९
१९१- भगवान् कल्किके द्वारा सत्ययुगकी स्थापना और मार्कण्डेयजीका युधिष्ठिरके लिये धर्मोपदेश ६२५
१९२- इक्ष्वाकुवंशी परीक्षित्‌का मण्डूकराजकी कन्यासे विवाह, शल और दलके चरित्र तथा वामदेव मुनिकी महत्ता..... ६२८
१९३- इन्द्र और बक मुनिका संवाद ६३६
१९४- क्षत्रिय राजाओंका महत्त्व—सुहोत्र और शिबिकी प्रशंसा ६३९
१९५- राजा ययातिद्वारा ब्राह्मणको सहस्र गौओंका दान ६४१
१९६- सेदुक और वृषदर्भका चरित्र ६४२
१९७- इन्द्र और अग्निद्वारा राजा शिबिकी परीक्षा ६४३
१९८- देवर्षि नारदद्वारा शिबिकी महत्ताका प्रतिपादन ६४६
१९९- राजा इन्द्रद्युम्न तथा अन्य चिरजीवी प्राणियोंकी कथा..... ६४९
२००- निन्दित दान, निन्दित जन्म, योग्य दानपात्र, श्राद्धमें ग्राह्य और अग्राह्य ब्राह्मण, दानपात्रके लक्षण, अतिथि-सत्कार, विविध दानोंका महत्त्व, वाणीकी शुद्धि, गायत्री-जप, चित्त-शुद्धि तथा इन्द्रिय-निग्रह आदि विविध विषयोंका वर्णन ६५२
२०१- उत्तंककी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान्‌का उन्हें वरदान देना तथा इक्ष्वाकुवंशी राजा कुवलाश्वका धुन्धुमार नाम पड़नेका कारण बताना ६६२
२०२- उत्तंकका राजा बृहदश्वसे धुन्धुका वध करनेके लिये आग्रह ६६५
२०३- ब्रह्माजीकी उत्पत्ति और भगवान् विष्णुके द्वारा मधु-कैटभका वध ६६७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२०४-	धुन्धुकी तपस्या और वरप्राप्ति, कुवलाश्वद्वारा धुन्धुका वध और देवताओंका कुवलाश्वको वर देना	६७१
२०५-	पतिव्रता स्त्री तथा पिता-माताकी सेवाका माहात्म्य	६७४
२०६-	कौशिक ब्राह्मण और पतिव्रताके उपाख्यानके अन्तर्गत ब्राह्मणोंके धर्मका वर्णन	६७६
२०७-	कौशिकका धर्मव्याधके पास जाना, धर्मव्याधके द्वारा पतिव्रतासे प्रेषित जान लेनेपर कौशिकको आश्चर्य होना, धर्मव्याधके द्वारा वर्णधर्मका वर्णन, जनकराज्यकी प्रशंसा और शिष्टाचारका वर्णन	६८०
२०८-	धर्मव्याधद्वारा हिंसा और अहिंसाका विवेचन	६८७
२०९-	धर्मकी सूक्ष्मता, शुभाशुभ कर्म और उनके फल तथा ब्रह्मकी प्राप्तिके उपायोंका वर्णन	६९०
२१०-	विषयसेवनसे हानि, सत्संगसे लाभ और ब्राह्मी विद्याका वर्णन	६९५
२११-	पंचमहाभूतोंके गुणोंका और इन्द्रियनिग्रहका वर्णन	६९६
२१२-	तीनों गुणोंके स्वरूप और फलका वर्णन	६९९
२१३-	प्राणवायुकी स्थितिका वर्णन तथा परमात्म-साक्षात्कारके उपाय	७००
२१४-	माता-पिताकी सेवाका दिग्दर्शन	७०४
२१५-	धर्मव्याधका कौशिक ब्राह्मणको माता-पिताकी सेवाका उपदेश देकर अपने पूर्वजन्मकी कथा कहते हुए व्याध होनेका कारण बताना	७०७
२१६-	कौशिक-धर्मव्याध-संवादका उपसंहार तथा कौशिकका अपने घरको प्रस्थान	७१०
२१७-	अग्निका अंगिराको अपना प्रथम पुत्र स्वीकार करना तथा अंगिरासे बृहस्पतिकी उत्पत्ति	७१३
२१८-	अंगिराकी संततिका वर्णन	७१४
२१९-	बृहस्पतिकी संततिका वर्णन	७१५
२२०-	पांचजन्य अग्निकी उत्पत्ति तथा उसकी संततिका वर्णन	७१८
२२१-	अग्निस्वरूप तप और भानु (मनुकी) संततिका वर्णन	७१९
२२२-	सह नामक अग्निका जलमें प्रवेश और अथर्वा अंगिराद्वारा पुनः उनका प्राकट्य	७२२
२२३-	इन्द्रके द्वारा केशीके हाथसे देवसेनाका उद्धार	७२५
२२४-	इन्द्रका देवसेनाके साथ ब्रह्माजीके पास तथा ब्रह्मर्षियोंके आश्रमपर जाना, अग्निका मोह और वनगमन	७२६
२२५-	स्वाहाका मुनिपत्नियोंके रूपोंमें अग्निके साथ समागम, स्कन्दकी उत्पत्ति तथा उनके द्वारा क्रौंच आदि पर्वतोंका विदारण	७३०
२२६-	विश्वामित्रका स्कन्दके जातकर्मादि तेरह संस्कार करना और विश्वामित्रके समझानेपर भी ऋषियोंका अपनी पत्नियोंको स्वीकार न करना तथा अग्निदेव आदिके द्वारा बालक स्कन्दकी रक्षा करना	७३३
२२७-	पराजित होकर शरणमें आये हुए इन्द्रसहित देवताओंको स्कन्दका अभयदान	७३५
२२८-	स्कन्दके पार्षदोंका वर्णन	७३६
२२९-	स्कन्दका इन्द्रके साथ वार्तालाप, देवसेनापतिके पदपर अभिषेक तथा देवसेनाके साथ उनका विवाह	७३८
२३०-	कृत्तिकाओंको नक्षत्रमण्डलमें स्थानकी प्राप्ति तथा मनुष्योंको कष्ट देनेवाले विविध ग्रहोंका वर्णन	७४२
२३१-	स्कन्दद्वारा स्वाहादेवीका सत्कार, रुद्रदेवके साथ स्कन्द और देवताओंकी भद्रवट-यात्रा, देवासुर-संग्राम, महिषासुर-वध तथा स्कन्दकी प्रशंसा	७४७
२३२-	कार्तिकेयके प्रसिद्ध नामोंका वर्णन तथा उनका स्तवन	७५६
	(द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व)	
२३३-	द्रौपदीका सत्यभामाको सती स्त्रीके कर्तव्यकी शिक्षा देना	७५९
२३४-	पतिदेवको अनुकूल करनेका उपाय—पतिकी अनन्यभावसे सेवा	७६४
२३५-	सत्यभामाका द्रौपदीको आश्वासन देकर श्रीकृष्ण-के साथ द्वारकाको प्रस्थान	७६५
	(घोषयात्रापर्व)	
२३६-	पाण्डवोंका समाचार सुनकर धृतराष्ट्रका खेद और चिन्तापूर्ण उद्गार	७६७
२३७-	शकुनि और कर्णका दुर्योधनकी प्रशंसा करते हुए उसे वनमें पाण्डवोंके पास चलनेके लिये उभाड़ना	७७१
२३८-	दुर्योधनके द्वारा कर्ण और शकुनिकी मन्त्रणा स्वीकार करना तथा कर्ण आदिका घोषयात्राको निमित्त बनाकर द्वैतवनमें जानेके लिये धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेने जाना	७७३
२३९-	कर्ण आदिके द्वारा द्वैतवनमें जानेका प्रस्ताव, राजा धृतराष्ट्रकी अस्वीकृति, शकुनिका समझाना, धृतराष्ट्रका अनुमति देना तथा दुर्योधनका प्रस्थान	७७४
२४०-	दुर्योधनका सेनासहित वनमें जाकर गौओंकी देखभाल करना और उसके सैनिकों एवं गन्धर्वोंमें परस्पर कटु संवाद	७७७
२४१-	कौरवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध और कर्णकी पराजय	७७९
२४२-	गन्धर्वोंद्वारा दुर्योधन आदिकी पराजय और उनका अपहरण	७८२
२४३-	युधिष्ठिरका भीमसेनको गन्धर्वोंके हाथसे कौरवोंको छुड़ानेका आदेश और इसके लिये अर्जुनकी प्रतिज्ञा	७८४
२४४-	पाण्डवोंका गन्धर्वोंके साथ युद्ध	७८७
२४५-	पाण्डवोंके द्वारा गन्धर्वोंकी पराजय	७८८
२४६-	चित्रसेन, अर्जुन तथा युधिष्ठिरका संवाद और दुर्योधनका छुटकारा	७९२
२४७-	सेनासहित दुर्योधनका मार्गमें ठहरना और कर्णके द्वारा उसका अभिनन्दन	७९४
२४८-	दुर्योधनका कर्णको अपनी पराजयका समाचार बताना	७९५
२४९-	दुर्योधनका कर्णसे अपनी ग्लानिका वर्णन करते हुए आमरण अनशनका निश्चय, दुःशासनको राजा बननेका आदेश, दुःशासनका दुःख और कर्णका दुर्योधनको समझाना	७९७
२५०-	कर्णके समझानेपर भी दुर्योधनका आमरण अनशन करनेका ही निश्चय	८००
२५१-	शकुनिके समझानेपर भी दुर्योधनको प्रायोप-वेशनसे विचलित होते न देखकर दैत्योंका कृत्याद्वारा उसे रसातलमें बुलाना	८०१
२५२-	दानवोंका दुर्योधनको समझाना और कर्णके अनुरोध करनेपर दुर्योधनका अनशन त्याग करके हस्तिनापुरको प्रस्थान	८०३
२५३-	भीष्मका कर्णकी निन्दा करते हुए दुर्योधनको पाण्डवोंसे संधि करनेका परामर्श देना, कर्णके क्षोभपूर्ण वचन और दिग्विजयके लिये प्रस्थान	८०७
२५४-	कर्णके द्वारा सारी पृथ्वीपर दिग्विजय और हस्तिनापुरमें उसका सत्कार	८१०
२५५-	कर्ण और पुरोहितकी सलाहसे दुर्योधनकी वैष्णवयज्ञके लिये तैयारी	८१२
२५६-	दुर्योधनके यज्ञका आरम्भ एवं समाप्ति	८१४
२५७-	दुर्योधनके यज्ञके विषयमें लोगोंका मत, कर्णद्वारा अर्जुनके वधकी प्रतिज्ञा, युधिष्ठिरकी चिन्ता तथा दुर्योधनकी शासननीति	८१६
	(मृगस्वप्नोद्भवपर्व)	
२५८-	पाण्डवोंका काम्यकवनमें गमन	८१८
	(द्वैहिद्रौणिकपर्व)	
२५९-	युधिष्ठिरकी चिन्ता, व्यासजीका पाण्डवोंके पास आगमन और दानकी महत्ताका प्रतिपादन	८२०
२६०-	दुर्वासाद्वारा महर्षि मुद्गलके दानधर्म एवं धैर्यकी परीक्षा तथा मुद्गलका देवदूतसे कुछ प्रश्न करना	८२३
२६१-	देवदूतद्वारा स्वर्गलोकके गुण-दोषोंका तथा दोषरहित विष्णुधामका वर्णन सुनकर मुद्गलका देवदूतको लौटा देना एवं व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाकर अपने आश्रमको लौट जाना	८२६
	(द्रौपदीहरणपर्व)	
२६२-	दुर्योधनका महर्षि दुर्वासाको आतिथ्यसत्कारसे संतुष्ट करके उन्हें युधिष्ठिरके पास भेजकर प्रसन्न होना	८३०
२६३-	दुर्वासाका पाण्डवोंके आश्रमपर असमयमें आतिथ्यके लिये जाना, द्रौपदीके द्वारा स्मरण किये जानेपर भगवान्‌का प्रकट होना तथा पाण्डवोंको दुर्वासाके भयसे मुक्त करना और उनको आश्वासन देकर द्वारका जाना	८३२
२६४-	जयद्रथका द्रौपदीको देखकर मोहित होना और उसके पास कोटिकास्यको भेजना	८३६

अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या

२६५- कोटिकास्यका द्रौपदीसे जयद्रथ और उसके साथियोंका परिचय देते हुए उसका भी परिचय पूछना ८३७

२६६- द्रौपदीका कोटिकास्यको उत्तर ८३९

२६७- जयद्रथ और द्रौपदीका संवाद ८४०

२६८- द्रौपदीका जयद्रथको फटकारना और जयद्रथ-द्वारा उसका अपहरण ८४२

२६९- पाण्डवोंका आश्रमपर लौटना और धात्रेयिकासे द्रौपदीहरणका वृत्तान्त जानकर जयद्रथका पीछा करना ८४६

२७०- द्रौपदीद्वारा जयद्रथके सामने पाण्डवोंके पराक्रमका वर्णन ८४९

२७१- पाण्डवोंद्वारा जयद्रथकी सेनाका संहार, जयद्रथका पलायन, द्रौपदी तथा नकुल-सहदेवके साथ युधिष्ठिरका आश्रमपर लौटना तथा भीम और अर्जुनका वनमें जयद्रथका पीछा करना ८५२

(जयद्रथविमोक्षणपर्व)

२७२- भीमद्वारा बंदी होकर जयद्रथका युधिष्ठिरके सामने उपस्थित होना, उनकी आज्ञासे छूटकर उसका गंगाद्वारमें तप करके भगवान् शिवसे वरदान पाना तथा भगवान् शिवद्वारा अर्जुनके सहायक भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन ८५६

(रामोपाख्यानपर्व)

२७३- अपनी दुरवस्थासे दुःखी हुए युधिष्ठिरका मार्कण्डेय मुनिसे प्रश्न करना ८६३

२७४- श्रीराम आदिका जन्म तथा कुबेरकी उत्पत्ति और उन्हें ऐश्वर्यकी प्राप्ति ८६४

२७५- रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, खर और शूर्पणखा-की उत्पत्ति, तपस्या और वर-प्राप्ति तथा कुबेरका रावणको शाप देना ८६५

२७६- देवताओंका ब्रह्माजीके पास जाकर रावणके अत्याचारसे बचानेके लिये प्रार्थना करना तथा ब्रह्माजीकी आज्ञासे देवताओंका रीछ और वानरयोनिमें संतान उत्पन्न करना एवं दुन्दुभी गन्धर्वीका मन्थरा बनकर आना ८६९

२७७- श्रीरामके राज्याभिषेककी तैयारी, रामवनगमन, भरतकी चित्रकूटयात्रा, रामके द्वारा खर-दूषण आदि राक्षसोंका नाश तथा रावणका मारीचके पास जाना ८७०

२७८- मृगरूपधारी मारीचका वध तथा सीताका अपहरण ८७५

२७९- रावणद्वारा जटायुका वध, श्रीरामद्वारा उसका अन्त्येष्टि-संस्कार, कबन्धका वध तथा उसके दिव्यस्वरूपसे वार्तालाप ८७९

२८०- राम और सुग्रीवकी मित्रता, वाली और सुग्रीवका युद्ध, श्रीरामके द्वारा वालीका वध तथा लंकाकी अशोकवाटिकामें राक्षसियोंद्वारा डरायी हुई सीताको त्रिजटाका आश्वासन ८८३

२८१- रावण और सीताका संवाद ८८९

२८२- श्रीरामका सुग्रीवपर कोप, सुग्रीवका सीताकी खोजमें वानरोंको भेजना तथा श्रीहनुमान्‌जीका लौटकर अपनी लंकायात्राका वृत्तान्त निवेदन करना ८९१

२८३- वानर-सेनाका संगठन, सेतुका निर्माण, विभीषण-का अभिषेक और लंकाकी सीमामें सेनाका प्रवेश तथा अंगदको रावणके पास दूत बनाकर भेजना ८९७

२८४- अंगदका रावणके पास जाकर रामका संदेश सुनाकर लौटना तथा राक्षसों और वानरोंका घोर संग्राम ९०१

२८५- श्रीराम और रावणकी सेनाओंका द्वन्द्वयुद्ध ९०५

२८६- प्रहस्त और धूम्राक्षके वधसे दुःखी हुए रावणका कुम्भकर्णको जगाना और उसे युद्धमें भेजना ९०६

२८७- कुम्भकर्ण, वज्रवेग और प्रमाथीका वध ९०८

२८८- इन्द्रजित्‌का मायामय युद्ध तथा श्रीराम और लक्ष्मणकी मूर्च्छा ९११

२८९- श्रीराम-लक्ष्मणका सचेत होकर कुबेरके भेजे हुए अभिमन्त्रित जलसे प्रमुख वानरोंसहित अपने नेत्र धोना, लक्ष्मणद्वारा इन्द्रजितका वध एवं सीताको मारनेके लिये उद्यत हुए रावणका अविन्ध्यके द्वारा निवारण करना ९१३

२९०- राम और रावणका युद्ध तथा रावणका वध ९१५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२९१-	श्रीरामका सीताके प्रति संदेह, देवताओंद्वारा सीताकी शुद्धिका समर्थन, श्रीरामका दल-बलसहित लंकासे प्रस्थान एवं किष्किन्धा होते हुए अयोध्यामें पहुँचकर भरतसे मिलना तथा राज्यपर अभिषिक्त होना	९१८
२९२-	मार्कण्डेयजीके द्वारा राजा युधिष्ठिरको आश्वासन	९२३
	(पतिव्रतामाहात्म्यपर्व)	
२९३-	राजा अश्वपतिको देवी सावित्रीके वरदानसे सावित्री नामक कन्याकी प्राप्ति तथा सावित्रीका पतिवरणके लिये विभिन्न देशोंमें भ्रमण	९२५
२९४-	सावित्रीका सत्यवान्‌के साथ विवाह करनेका दृढ़ निश्चय	९२८
२९५-	सत्यवान् और सावित्रीका विवाह तथा सावित्रीका अपनी सेवाओंद्वारा सबको संतुष्ट करना ...	९३१
२९६-	सावित्रीकी व्रतचर्या तथा सास-ससुर और पतिकी आज्ञा लेकर सत्यवान्‌के साथ उसका वनमें जाना	९३३
२९७-	सावित्री और यमका संवाद, यमराजका संतुष्ट होकर सावित्रीको अनेक वरदान देते हुए मरे हुए सत्यवान्‌को भी जीवित कर देना तथा सत्यवान् और सावित्रीका वार्तालाप एवं आश्रमकी ओर प्रस्थान.....	९३६
२९८-	पत्नीसहित राजा द्युमत्सेनकी सत्यवान्‌के लिये चिन्ता, ऋषियोंका उन्हें आश्वासन देना, सावित्री और सत्यवान्‌का आगमन तथा सावित्रीद्वारा विलम्बसे आनेके कारणपर प्रकाश डालते हुए वर-प्राप्तिका विवरण बताना.....	९४७
२९९-	शाल्वदेशकी प्रजाके अनुरोधसे महाराज द्युमत्सेनका राज्याभिषेक कराना तथा सावित्रीको सौ पुत्रों और सौ भाइयोंकी प्राप्ति	९५०
	(कुण्डलाहरणपर्व)	
३००-	सूर्यका स्वप्नमें कर्णको दर्शन देकर उसे इन्द्रको कुण्डल और कवच न देनेके लिये सचेत करना तथा कर्णका आग्रहपूर्वक कुण्डल और कवच देनेका ही निश्चय रखना.....	९५२
३०१-	सूर्यका कर्णको समझाते हुए उसे इन्द्रको कुण्डल न देनेका आदेश देना.....	९५५
३०२-	सूर्य-कर्ण-संवाद, सूर्यकी आज्ञाके अनुसार कर्णका इन्द्रसे शक्ति लेकर ही उन्हें कुण्डल और कवच देनेका निश्चय	९५६
३०३-	कुन्तिभोजके यहाँ ब्रह्मर्षि दुर्वासाका आगमन तथा राजाका उनकी सेवाके लिये पृथाको आवश्यक उपदेश देना	९५८
३०४-	कुन्तीका पितासे वार्तालाप और ब्राह्मणकी परिचर्या.....	९६१
३०५-	कुन्तीकी सेवासे संतुष्ट होकर तपस्वी ब्राह्मणका उसको मन्त्रका उपदेश देना.....	९६२
३०६-	कुन्तीके द्वारा सूर्यदेवताका आवाहन तथा कुन्ती-सूर्य-संवाद.....	९६४
३०७-	सूर्यद्वारा कुन्तीके उदरमें गर्भस्थापन	९६७
३०८-	कर्णका जन्म, कुन्तीका उसे पिटारीमें रखकर जलमें बहा देना और विलाप करना.....	९६९
३०९-	अधिरथ सूत तथा उसकी पत्नी राधाको बालक कर्णकी प्राप्ति, राधाके द्वारा उसका पालन, हस्तिनापुरमें उसकी शिक्षा-दीक्षा तथा कर्णके पास इन्द्रका आगमन.....	९७१
३१०-	इन्द्रका कर्णको अमोघ शक्ति देकर बदलेमें उसके कवच-कुण्डल लेना	९७३
	(आरणेयपर्व)	
३११-	ब्राह्मणकी अरणि एवं मन्थन-काष्ठका पता लगानेके लिये पाण्डवोंका मृगके पीछे दौड़ना और दुःखी होना	९७८
३१२-	पानी लानेके लिये गये हुए नकुल आदि चार भाइयोंका सरोवरके तटपर अचेत होकर गिरना	९८०
३१३-	यक्ष और युधिष्ठिरका प्रश्नोत्तर तथा युधिष्ठिरके उत्तरसे संतुष्ट हुए यक्षका चारों भाइयोंके जीवित होनेका वरदान देना	९८३
३१४-	यक्षका चारों भाइयोंको जिलाकर धर्मके रूपमें प्रकट हो युधिष्ठिरको वरदान देना.....	९९४
३१५-	अज्ञातवासके लिये अनुमति लेते समय शोकाकुल हुए युधिष्ठिरको महर्षि धौम्यका समझाना, भीमसेनका उत्साह देना तथा आश्रमसे दूर जाकर पाण्डवोंका परस्पर परामर्शके लिये बैठना...	९९६
३१६-	वनपर्व-श्रवण-महिमा	९९९

अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या

विराटपर्व

(पाण्डवप्रवेशपर्व)

१- विराटनगरमें अज्ञातवास करनेके लिये पाण्डवोंकी गुप्त मन्त्रणा तथा युधिष्ठिरके द्वारा अपने भावी कार्यक्रमका दिग्दर्शन १००१
२- भीमसेन और अर्जुनद्वारा विराटनगरमें किये जानेवाले अपने अनुकूल कार्योंका निर्देश .. १००४
३- नकुल, सहदेव तथा द्रौपदीद्वारा अपने-अपने भावी कर्तव्योंका दिग्दर्शन १००६
४- धौम्यका पाण्डवोंको राजाके यहाँ रहनेका ढंग बताना और सबका अपने-अपने अभीष्ट स्थानोंको जाना १००९
५- पाण्डवोंका विराटनगरके समीप पहुँचकर श्मशानमें एक शमीवृक्षपर अपने अस्त्र-शस्त्र रखना १०१४
६- युधिष्ठिरद्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति और देवीका प्रत्यक्ष प्रकट होकर उन्हें वर देना १०१७
७- युधिष्ठिरका राजसभामें जाकर विराटसे मिलना और वहाँ आदरपूर्वक निवास पाना १०१९
८- भीमसेनका राजा विराटकी सभामें प्रवेश और राजाके द्वारा आश्वासन पाना १०२३
९- द्रौपदीका सैरन्ध्रीके वेशमें विराटके रनिवासमें जाकर रानी सुदेष्णासे वार्तालाप करना और वहाँ निवास पाना १०२६
१०- सहदेवका राजा विराटके साथ वार्तालाप और गौओंकी देखभालके लिये उनकी नियुक्ति .. १०२९
११- अर्जुनका राजा विराटसे मिलना और राजाके द्वारा कन्याओंको नृत्य आदिकी शिक्षा देनेके लिये उनको नियुक्त करना १०३१
१२- नकुलका विराटके अश्वोंकी देख-रेखमें नियुक्त होना १०३४

(समयपालनपर्व)

१३- भीमसेनके द्वारा जीमूत नामक विश्वविख्यात मल्लका वध १०३६

(कीचकवधपर्व)

१४- कीचकका द्रौपदीपर आसक्त हो उससे प्रणय-याचना करना और द्रौपदीका उसे फटकारना १०४०
१५- रानी सुदेष्णाका द्रौपदीको कीचकके घर भेजना १०४५
१६- कीचकद्वारा द्रौपदीका अपमान १०४९
१७- द्रौपदीका भीमसेनके समीप जाना १०६०
१८- द्रौपदीका भीमसेनके प्रति अपने दुःखके उद्गार प्रकट करना १०६२
१९- पाण्डवोंके दुःखसे दुःखित द्रौपदीका भीमसेनके सम्मुख विलाप १०६५
२०- द्रौपदीद्वारा भीमसेनसे अपना दुःख निवेदन करना १०६९
२१- भीमसेन और द्रौपदीका संवाद १०७२
२२- कीचक और भीमसेनका युद्ध तथा कीचक-वध १०७६
२३- उपकीचकोंका सैरन्ध्रीको बाँधकर श्मशान-भूमिमें ले जाना और भीमसेनका उन सबको मारकर सैरन्ध्रीको छुड़ाना १०८३
२४- द्रौपदीका राजमहलमें लौटकर आना और बृहन्नला एवं सुदेष्णासे उसकी बातचीत ... १०८६

(गोहरणपर्व)

२५- दुर्योधनके पास उसके गुप्तचरोंका आना और उनका पाण्डवोंके विषयमें कुछ पता न लगा, यह बताकर कीचकवधका वृत्तान्त सुनाना १०८९
२६- दुर्योधनका सभासदोंसे पाण्डवोंका पता लगानेके लिये परामर्श तथा इस विषयमें कर्ण और दुःशासनकी सम्मति १०९१
२७- आचार्य द्रोणकी सम्मति १०९३
२८- युधिष्ठिरकी महिमा कहते हुए भीष्मकी पाण्डवोंके अन्वेषणके विषयमें सम्मति १०९४
२९- कृपाचार्यकी सम्मति और दुर्योधनका निश्चय १०९६
३०- सुशर्माके प्रस्तावके अनुसार त्रिगर्तों और कौरवोंका मत्स्यदेशपर धावा १०९९
३१- चारों पाण्डवोंसहित राजा विराटकी सेनाका युद्धके लिये प्रस्थान ११०१
३२- मत्स्य तथा त्रिगर्तदेशीय सेनाओंका परस्पर युद्ध ११०४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३३-	सुशर्माका विराटको पकड़कर ले जाना, पाण्डवोंके प्रयत्नसे उनका छुटकारा, भीमद्वारा सुशर्माका निग्रह और युधिष्ठिरका अनुग्रह करके उसे छोड़ देना	११०७
३४-	राजा विराटद्वारा पाण्डवोंका सम्मान, युधिष्ठिरद्वारा राजाका अभिनन्दन तथा विराटनगरमें राजाकी विजयघोषणा	१११२
३५-	कौरवोंद्वारा उत्तर दिशाकी ओरसे आकर विराटकी गौओंका अपहरण और गोपाध्यक्षका उत्तरकुमारको युद्धके लिये उत्साह दिलाना	१११४
३६-	उत्तरका अपने लिये सारथि ढूँढ़नेका प्रस्ताव, अर्जुनकी सम्मतिसे द्रौपदीका बृहन्नलाको सारथि बनानेके लिये सुझाव देना	१११६
३७-	बृहन्नलाको सारथि बनाकर राजकुमार उत्तरका रणभूमिकी ओर प्रस्थान	१११८
३८-	उत्तरकुमारका भय और अर्जुनका उसे आश्वासन देकर रथपर चढ़ाना	११२१
३९-	द्रोणाचार्यद्वारा अर्जुनके अलौकिक पराक्रमकी प्रशंसा	११२६
४०-	अर्जुनका उत्तरको शमीवृक्षसे अस्त्र उतारनेके लिये आदेश	११२७
४१-	उत्तरका अर्जुनके आदेशके अनुसार शमीवृक्षसे पाण्डवोंके दिव्य धनुष आदि उतारना	११२८
४२-	उत्तरका बृहन्नलासे पाण्डवोंके अस्त्र-शस्त्रोंके विषयमें प्रश्न करना	११२९
४३-	बृहन्नलाद्वारा उत्तरको पाण्डवोंके आयुधोंका परिचय कराना	११३१
४४-	अर्जुनका उत्तरकुमारसे अपना और अपने भाइयोंका यथार्थ परिचय देना	११३२
४५-	अर्जुनद्वारा युद्धकी तैयारी, अस्त्र-शस्त्रोंका स्मरण, उनसे वार्तालाप तथा उत्तरके भयका निवारण	११३५
४६-	उत्तरके रथपर अर्जुनको ध्वजकी प्राप्ति, अर्जुनका शंखनाद और द्रोणाचार्यका कौरवोंसे उत्पातसूचक अपशकुनोंका वर्णन	११३९
४७-	दुर्योधनके द्वारा युद्धका निश्चय तथा कर्णकी उक्ति	११४२
४८-	कर्णकी आत्मप्रशंसापूर्ण अहंकारोक्ति	११४५
४९-	कृपाचार्यका कर्णको फटकारते हुए युद्धके विषयमें अपना विचार बताना	११४६
५०-	अश्वत्थामाके उद्‌गार	११४९
५१-	भीष्मजीके द्वारा सेनामें शान्ति और एकता बनाये रखनेकी चेष्टा तथा द्रोणाचार्यके द्वारा दुर्योधनकी रक्षाके लिये प्रयत्न	११५१
५२-	पितामह भीष्मकी सम्मति	११५३
५३-	अर्जुनका दुर्योधनकी सेनापर आक्रमण करके गौओंको लौटा लेना	११५५
५४-	अर्जुनका कर्णपर आक्रमण, विकर्णकी पराजय, शत्रुंतप और संग्रामजित्‌का वध, कर्ण और अर्जुनका युद्ध तथा कर्णका पलायन	११५७
५५-	अर्जुनद्वारा कौरवसेनाका संहार और उत्तरका उनके रथको कृपाचार्यके पास ले जाना	११६२
५६-	अर्जुन और कृपाचार्यका युद्ध देखनेके लिये देवताओंका आकाशमें विमानोंपर आगमन	११६६
५७-	कृपाचार्य और अर्जुनका युद्ध तथा कौरवपक्षके सैनिकोंद्वारा कृपाचार्यको हटा ले जाना	११६८
५८-	अर्जुनका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध और आचार्यका पलायन	११७१
५९-	अश्वत्थामाके साथ अर्जुनका युद्ध	११७६
६०-	अर्जुन और कर्णका संवाद तथा कर्णका अर्जुनसे हारकर भागना	११७८
६१-	अर्जुनका उत्तरकुमारको आश्वासन तथा अर्जुनसे दुःशासन आदिकी पराजय	११८०
६२-	अर्जुनका सब योद्धाओं और महारथियोंके साथ युद्ध	११८४
६३-	अर्जुनपर समस्त कौरवपक्षीय महारथियोंका आक्रमण और सबका युद्धभूमिसे पीठ दिखाकर भागना	११८६
६४-	अर्जुन और भीष्मका अद्भुत युद्ध तथा मूर्छित भीष्मका सारथिद्वारा रणभूमिसे हटाया जाना	११८७
६५-	अर्जुन और दुर्योधनका युद्ध, विकर्ण आदि योद्धाओं-सहित दुर्योधनका युद्धके मैदानसे भागना	११९१
६६-	अर्जुनके द्वारा समस्त कौरवदलकी पराजय तथा कौरवोंका स्वदेशको प्रस्थान	११९३
६७-	विजयी अर्जुन और उत्तरका राजधानीकी ओर प्रस्थान	११९६
६८-	राजा विराटकी उत्तरके विषयमें चिन्ता,	

अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या

विजयी उत्तरका नगरमें प्रवेश, प्रजाओंद्वारा उनका स्वागत, विराटद्वारा युधिष्ठिरका तिरस्कार और क्षमा-प्रार्थना एवं उत्तरसे युद्धका समाचार पूछना ११९९

६९- राजा विराट और उत्तरकी विजयके विषयमें बातचीत १२०५

(वैवाहिकपर्व)

७०- अर्जुनका राजा विराटको महाराज युधिष्ठिरका परिचय देना १२०७

७१- विराटको अन्य पाण्डवोंका भी परिचय प्राप्त होना तथा विराटके द्वारा युधिष्ठिरको राज्य समर्पण करके अर्जुनके साथ उत्तराके विवाहका प्रस्ताव करना १२०९

७२- अर्जुनका अपनी पुत्रवधूके रूपमें उत्तराको ग्रहण करना एवं अभिमन्यु और उत्तराका विवाह १२१२

चित्र-सूची

सादा

१- श्रीकृष्णके द्वारा द्रौपदीको आश्वासन ७३

२- द्रौपदी और भीमसेनका युधिष्ठिरसे संवाद. १०८

३- अर्जुनकी तपस्या १४५

४- अर्जुनका किरातवेषधारी भगवान् शिवपर बाण चलाना १४५

५- नलकी पहचानके लिये दमयन्तीकी लोकपालोंसे प्रार्थना १९२

६- सती दमयन्तीके तेजसे पापी व्याधका विनाश २०९

७- भगवान् शंकरका मंकणक मुनिको नृत्य करनेसे रोकना २८३

८- देवताओंद्वारा वृत्रासुरके वधके लिये दधीचिसे उनकी अस्थियोंकी याचना ३४०

९- देवराज इन्द्रका वज्रके प्रहारसे वृत्रासुरका वध करना ३४०

१०- महर्षि कपिलकी क्रोधाग्निसे सगरपुत्रोंका भस्म होना ३५६

११- महर्षि अगस्त्यका समुद्रपान ३५६

१२- भगवान् परशुरामद्वारा सहस्रार्जुनका वध ३९०

१३- प्रभासक्षेत्रमें पाण्डवोंकी यादवोंसे भेंट ३९०

१४- राजा शिबिका कबूतरकी रक्षाके लिये बाजको अपने शरीरका मांस काटकर देना ४२१

१५- द्रौपदीका भीमसेनको सौगन्धिक पुष्प भेंट करके वैसे ही और पुष्प लानेका आग्रह ४६६

१६- स्वर्गसे लौटकर अर्जुन धर्मराजको प्रणाम कर रहे हैं ५३०

१७- वनमें पाण्डवोंसे श्रीकृष्ण-सत्यभामाका मिलना ५८४

१८- तपस्वीके वेशमें मण्डूकराजका राजाको आश्वासन ६३१

१९- ययातिसे ब्राह्मणकी याचना ६३१

२०- भगवान् विष्णुके द्वारा मधुकैटभका जाँघोंपर वध ६६९

२१- कौशिक ब्राह्मण और माता-पिताके भक्त धर्मव्याध ७०५

२२- कार्तिकेयके द्वारा महिषासुरका वध ७५३

२३- द्रौपदी-सत्यभामा-संवाद ७५८

२४- अर्जुन-चित्रसेन-युद्ध ७८९

२५- सीताजीका रावणको फटकारना ८९२

२६- हनुमान्‌जीकी श्रीसीताजीसे भेंट ८९२

२७- यम-सावित्री ९४२

२८- कर्णको इन्द्रका शक्ति-दान ९७६

२९- युधिष्ठिर और बगुलारूपधारी यक्ष ९७६

३०- विराटके यहाँ पाण्डव १०२५

३१- विराटकी राजसभामें कीचकद्वारा सैरन्ध्रीका अपमान १०५१

३२- अर्जुनका शंखनाद ११३८